भट्टारक जिनचन्द्र

जीवन-परिचय : दिल्ली के भट्टारकों में भट्टारक जिनचन्द्र का स्थान महत्त्वपूर्ण है। जिनचन्द्र नाम के तीन आचार्य हुए हैं—1. गुणचन्द्र के शिष्य जिनचन्द्र, 2. मेरुचन्द्र के शिष्य जिनचन्द्र, 3. शुभचन्द्र के शिष्य जिनचन्द्र।

हम यहाँ शुभचन्द्र के शिष्य भट्टारक जिनचन्द्र की चर्चा कर रहे हैं।

भट्टारक जिनचन्द्र का समय 14-15वीं शताब्दी सिद्ध होता है। इनकी आयु 91 वर्ष, 8 माह, 27 दिन थी।

रचना-परिचय : आचार्य जिनचन्द्र की निम्न रचनाएँ हैं—

1. सिद्धान्तसार : सिद्धान्तसार में 79 गाथाएँ हैं। इस ग्रन्थ पर आचार्य--ज्ञान-भूषण की संस्कृत-टीका भी है।

2. जिनचतुर्विंशति स्तोत्र : इसमें संस्कृत भाषा में 24 तीर्थंकरों की स्तुतियाँ निबद्ध की गयी हैं। यह स्तोत्र जयपुर के विजयराम पांड्या के शास्त्रभंडार के एक गुटके में संग्रहीत है।

जिनचन्द्र ने प्राचीन ग्रन्थों की नयी-नयी प्रतियाँ लिखकर मन्दिरों में प्रेषित कीं, पुरातनमन्दिरों का जीर्णोद्धार एवं नये मन्दिरों की प्रतिष्ठाएँ कराकर जैन संस्कृति और धर्म का पर्याप्त प्रचार किया। ये बघेरवाला जाति के थे।